Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान

पटवारी

राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)

भाग - 3

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	1
2	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	10
3	मेवाड़ का इतिहास	13
4	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	28
5	राज्यपाल	38
6	मुख्यमंत्री	44
7	विधान सभा	49
8	उच्च न्यायालय	58
9	राजस्थान लोक सेवा आयोग	62
10	राजस्थान में जिला प्रशासन	65
11	राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग	72
12	राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान	75
13	राजस्थान के लोकायुक्त	77
14	राजस्थान राज्य सूचना आयोग	80
15	लोक नीति	83
16	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	87
17	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	95
18	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	103
19	राजस्थान की चित्रकला	111
20	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	122
21	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	130
22	राजस्थान के मेले और त्योहार	153
23	राजस्थान के लोक संगीत और वाद्य यंत्र	165

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान के लोक नृत्य	175
25	राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज एवं प्रथाएँ	182
26	राजस्थान का साहित्य	187
27	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	199
28	राजस्थान में पर्यटन	212
29	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	242
30	राजस्थान का भौतिकीय स्वरुप	257
31	संभाग एवं जिला परिदृश्य	260
32	राजस्थान का भौगोलिक विभाजन	277
33	राजस्थान की जलवायु	288
34	राजस्थान में वनस्पति एवं वन	299
35	जनसंख्या परिदृश्य	304
36	राजस्थान में मृदा	307
37	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	311
38	कृषि प्रमुख फसलें उत्पादन व वितरण	332

1 CHAPTER राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति (शिकारी संस्कृति) के रूप में फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

बागोर

- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित |
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा ।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं ।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 × 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार ।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
  - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।
- **राजस्थान में अवशेष -** बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड के** अवशेष ।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है। [PC – 2007]
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।

[1st/2nd/3rd Gra/CET – 2023/Lab Ass/FG - 2022]

- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है। [3rd Grade -2023]
- यह बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने की वजह से इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड,ओझियाना, बालाथल, पछमता,भगवानपुरा, रोजड़ी आदि।

[CET – 2023, 3rd Grade - 2023]

- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल [Raj PSI -2021]
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में। [2nd/3rd Gra -2023/COPA -2023]
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया [CET – 2023]

- आहड़ में खुदाई के बाद एक 4000 साल पुरानी ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति की खोज की गई थी, जिसे धूलकोट नामक एक टीले के नीचे दबा दिया गया था [EO/RO - 2023]
- आहड़ का सम्पूर्ण कालक्रम दो कालखण्डों में बांटा जा सकता है-प्रथम कालखण्ड 'ताम्रयुगीन' व द्वितीय कालखण्ड 'लौहयुगीन' सभ्यता के द्योतक है।

विशेषताएँ [RAS – 2021, ARO -2022]

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भा**ण्ड** का प्रयोग किया जाता था। [2nd Grade -2023]
  - मृद्भा**ण्ड उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ [2nd Grade – 2017]

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |
  - प्रमुख खाद्यान्नों - गेहूँ, ज्वार और चावल

[2nd Grade-2019]

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"

- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति

- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ** [EO/RO – 2023]
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**
- लेपिस लाजुली -आहड़ के उत्खनन से प्राप्त सामग्री जो बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत देती है।
- रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। [Women Supervisor-2019]

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।

गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। [Lab Ass/JEN/वनरक्षक -2022]
	• **ग्रामीण** संस्कृति थी।
	• 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया।
	• **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़
	  ○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। [JEN -2020]
	• 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष ।
	• 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त:
	  ○ सादे काल, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित

	• यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। [Sci Ass 2019/Raj Police -2022] • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच [वनरक्षक -2022] • **खोजकर्ता -** 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा [वनरक्षक -2022, 3rd Grade -2023] • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। [JEN -2016] ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। ○ दुर्गीकरण के पुरावशेष मिले [FSO -2019] • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भा**ण्ड** मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रचूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित। [Lab Ass – 2022] ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**।
	• **कालखण्ड** - 2000 ईं. पू. से 1500 ईं. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । [Const -2022] • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।

गणेश्वर (नीमकाथाना)

- **नीम-का-थाना** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित है।
  [EO/RO – 23VDO Mains -22/3rd Gra -23]
- **2800 ईसा पूर्व** में विकसित।
- गणेश्वर सभ्यता - "**पुरातत्व का पुष्कर**"।
- ताम्रयुगीन संस्कृति का **प्रचुर भंडार प्राप्त** ।
  - इसीलिए "**ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी" / ताम्र संचयी संस्कृति** कहा जाता है।
    [2nd Gra -2023/PTI -2022]
  - युग - ताम्र/काँस्य युग
    [ARO-22/1st Gra -22/3rd Gra -23
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में ।
  [2nd Gra/Lab Ass – 2022]
- **मृद्भांड** - कपीशवर्णी(गैरिक) मृद्पात्र। [School Lect -22]
- **वृहदाकार पत्थर** के बाँध का प्रमाण।
- **मकान पत्थर के** बनाए गए थे। [CET -23/Lab Ass -22]
  - **ईंटो** के उपयोग का कोई **प्रमाण नही** ।
- ताँबे का **बाण** और **मछली** पकड़ने का **काँटा** प्राप्त हुआ।
  [PTI – 2023]

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की **आसींद तहसील** में स्थित है।
- **उत्खनन**- 1998-1999 में बी. आर. मीना के निर्देशन में ।
- **अवधि** 700 ई. पू. से 200 ई. तक ।
- **खोजे-**
  - मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
  - तांबे की चूड़ियाँ
  - मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
  - ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- मकान की छतों में टाइल्स का प्रयोग किया गया था।

जोधपुरा सभ्यता

- **कोटपूतली - बहरोड़** में **साबी नदी** के किनारे स्थित ।
  [JEN – 2016]
- **लौहयुगीन (पीरियड-III)** प्राचीन सभ्यता स्थल
  [Ayurveda Lect -2021]
  - लौह धातु का **निष्कर्षण** करने वाली **भट्टियाँ** भी खोजी गई।

- **अवधि** - 2500 ईसा पूर्व से 200 ई.
- **उत्खनन**- 1972-73 में आर .सी. अग्रवाल और विजयी कुमार द्वारा
- **कपिशवर्णी मृद्पात्रों** का भंडार प्राप्त
  - स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- **घोड़े** का उपयोग **रथ खींचने** हेतु किया जाता था।
- मकान की छतो पर **टाईल्स** एवं **छप्पर छाने** का प्रयोग।
- **मुख्य आहार** - चावल व मांस
- **शुंग** व **कुषाणकालीन सभ्यता**

ताम्रपाषाण कालीन स्थल	
स्थल	**विशेषताएँ**
मेहरगढ़	• तीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त - नवपाषाणकालीन, क्वेटा संस्कृति और हड़प्पा कालीन संस्कृति • कपास की खेती का प्राचीनतम साध्य प्राप्त ।
मेढ़ी - पूर्व बलोचिस्तान	• कुल्ली नाल संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल। • ताँबे को गलाकर टिन के निर्माण का साक्ष्य प्राप्त। • दफनाने, दाहसंस्कार एवं कलश शवाधान के साक्ष्य भी प्राप्त ।
आमरी	• पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में स्थित। • चार संस्कृतियों की जानकारी : ○ आमरी संस्कृति ○ हड़प्पा संस्कृति ○ झुकर संस्कृति ○ झांगर संस्कृति
रानाघुन्दई	• पाकिस्तान में गोमलघाटी के झोलारलाई क्षेत्र में स्थित। • खोज: ○ कूबड़दार बैल की मूर्ति ○ सोने की पिन ○ घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं।
कोटदीजी	• प्राप्त सोलह स्तर 2 संस्कृतियों से सम्बद्ध है: ○ ऊपर के तीन स्तर हडप्पा काल से ○ एक संक्रमण काल से ○ नीचे के बारह स्तर हड़प्पा पूर्व काल से
कालीबंगा	• पूर्व हड़प्पा संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति से संबंद्ध ।
मुंडीगाक	• ऊँची दीवार तथा उसके ऊपर धूप में पक्की ईंटों की बुर्ज का साक्ष्य।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
  [Raj Police – 2022, Lab Ass – 2022]
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई. [Raj Police – 2022]
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष। [3rd Grade – 2023]
  - उत्खननकर्ता - 1961 से 69 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव ने करवाया।
    [1st/2nd Grade – 2022, 3rd Grade - 2023]
  - **उत्तरदायित्व** - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
    [CET -2023]
  - **उत्खननकर्ता चरण - 5**
    [CET – 2023, 1st Grade -2022
  - **कालीबंगा** की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी। [CET – 2023]
- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ काले रंग की चूड़ियां
- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में [जेल प्रहरी – 2018]
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए
  [Raj PSI – 2021, Lab Ass -2022]
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
    [Ayurveda Lect – 2021]
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
  - **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
    - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
    - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
  - **मुहरें**
    - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**
      - ✓ **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
      - ✓ **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
  - दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - **तौलने के बाट**
    - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।

- **बर्तन**
  - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
  - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।

- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है।
- अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्योमितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है। [IPO -2018]

- **आभूषण**
  - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
  - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
- **नगर नियोजन**
  - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
  - **दरवाज़े**
  - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
  - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
  - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
- **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
  - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
  - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
  - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श [CL – 2016]
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये "**भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य**" मिला है।
- लोहे एवं शैल चित्र का कोई प्रमाण यहाँ नहीं मिला [3rd Grade/PTI(G-II) – 2023]

- पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
  - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
  - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।
- **खिलौने**
  - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
- **धर्म संबंधी अवशेष**
  - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**

- **सात आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई। [Raj PSI -21, Lab Ass/ FG -22]
  - यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - **दुर्ग (किला)**
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के **अवशेष** भी प्राप्त हुए। [CET – 2023]
    - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- हनुमानगढ़ जिले में **सरस्वती नदी** / **घग्गर नदी** के निकट स्थित हैं। [ARO – 2022]
- **प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन** सभ्यता है।
- **उत्खनन**- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में एक स्वीडिश कंपनी द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया। [JEN -2016]
- **कुषाणकालीन** व उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई।
- ब्राह्मी लिपि ने नाम से अंकित **2 कांस्य मुहरें** प्राप्त
- मुख्य रूप से **चावल** की **खेती** [ARO – 2022]
- **मकानों** का **निर्माण ईंटो** से हुआ।
- **मृद्भांड** - लाल व गुलाबी रंग के
  - चाक से बने, पतले व चिकने होते थे।
- **गुरु** - शिष्य मृदा मूर्ति मिली।
  - **कुषाण कालीन** सभ्यता के सामान मिले।

बरोर

- गंगानगर में **सरस्वती नदी** के तट पर स्थित।
- **उत्खनन** - 2003 ईमें .।
- **प्राक्, प्रारंभिक** तथा **विकसित हड़प्पा काल** में विभाजित।
- **विशेषता** - मृद्भांडों में **काली मिट्टी** के **प्रयोग** के **प्रमाण** प्राप्त हुए हैं।
  - **वर्ष 2006** - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- **हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान** जैसे:
  - सुनियोजित नगर व्यवस्था
  - मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
  - विशिष्ट मृद्भांड परम्परा
- **बटन** के **आकार** की **मुहरे** प्राप्त हुई।

लौहयुगीन संस्कृति

इसे "आदि आर्यों की संस्कृति" के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे **वर्तमान कोटपुतली - बहरोड़** जिले के **विराट नगर** में स्थित है।
- **लौहयुगीन** सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर ।
  - **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी।**

[जेल प्रहरी -17/ Women Sup-19]
- **खोजकर्ता** - 1837 में कैप्टन बर्ट।
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।

[School Lect -2022, 2nd Gra PTI(G-II) – 2023]
- 1837 में **कैप्टन** बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के **प्रथम भाब्रू शिलालेख** की खोज की थी। [2nd Grade- 2023]

बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व

तीन पहाड़ियाँ सर्वप्रमुख – पाषाण ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बाँध विहार बाँध चेत्य के अवशेष आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। [Raj Police – 2022]

- बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।

[2nd Grade – 2019]
- उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्भांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

- **पुरातत्व** के महत्व की **तीन पहाड़ियाँ**:

[forest guard/ARO/2nd Gra -2022]
  - बीज़क डूँगरी
  - भीम डूँगरी
  - महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक तथा यूनानी [RAS -2018, 3rd Grade/CET - 2023]
- बौद्ध धर्म के **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- भवन निर्माण के लिए **मिट्टी की ईंटो** का **अत्यधिक प्रयोग**।
- माना जाता है कि इसकी **समाप्ति हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा की गई।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था [Raj Police – 2022]
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के काल गोल चैत्यगृह मिला है [3rd Grade – 2023, Lab Ass – 2022]
- बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल , महाजनपद काल , मौर्य काल , गुप्त काल , हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।

[EO/RO -2023, CET -2023, Raj Police - 2018]
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे

[2nd Grade - 2023]

रैढ़ सभ्यता [RAS 2023]

- टोंक जिले की **निवाई तहसील** में **ढील नदी** के किनारे स्थित।
- **इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर** कहा जाता है।

[वनरक्षक -2022]
- **उत्खननकर्ता** - 1938-39 में दयाराम साहनी और उसके बाद डॉ. केदारनाथ पूरी द्वारा। [जेल प्रहरी – 2018]
- **3075 आहत मुद्राएँ** तथा **300 मालव जनपद** के **सिक्के** प्राप्त।
  - मालव जनपद की लौह सामग्रियाँ भी मिली अंत: इसे मालव नगर भी कहा जाता है

[RAS -2023, Patwar - 2011]
  - यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक **खंडित सिक्का** भी प्राप्त हुआ। [JEN – 2016]
- **मृद्भांड चाक** से **निर्मित** मात्रदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त।
- **विभिन्न आभूषण** - कर्णफूल, हार, पायल आदि।
- **आलीशान इमारतों** के अवशेष।
- **एशिया** का अब तक का **सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार।**

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- **टोंक** जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।

[Const-2022, Vet Off -2020]
- **अन्य नाम** -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- **उत्खननकर्ता**- 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा ।
- **खोज**-
  - बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त ।
  - मृदभांडो के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
  - उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति प्राप्त।
  - मोदक रूप में गणेश का अंकन
  - फणधारी नाग का अंकन
  - कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा
- वर्तमान में **खेडा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।
- लाल रंग के **मृदभाड़** एवं **अनाज** भरने के **कलात्मक मटकों** के **अवशेष** प्राप्त ।

ईसवाल (उदयपुर)

- 5वीं शताब्दी ई.पू. में **लोहा गलाने का उद्योग विकसित** होने के प्रमाण मिले।
  - **प्राचीन औद्योगिक बस्ती** भी कहा जाता है।
- **उत्खनन** -राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्व विभाग के निर्देशन में ।
  - उत्खनन में **ऊँट के दाँत** एवं **हड्डियाँ** मिली।

- **प्राक् ऐतिहासिक** काल से **मध्यकाल** तक का प्रतिनिधित्व करने वाली **मानव बस्ती** के प्रमाण पाँच स्तरों से प्राप्त।
- प्राप्त सिक्कों को **प्रारंभिक कुषाणकालीन** माना जाता है।
- **मकान पत्थरों** से बनाये गए।

नोह (भरतपुर)

- **उत्खनन** - 1963-64 में रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- **अवधि** - 1100 ई.पू. - 900 ई.पू.
- **मृद्भांड** - काले व लाल मृद्भांड संस्कृति
- मौर्यकालीन पॉलिस की हुई विशालकाय **यक्ष/ जाखबाबा** प्रतिमा और 16 रिंगवेल प्राप्त हुई है [JSA -2019, JEN – 2016]
- उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं [FSO-2023]

चन्द्रावती (आबू-सिरोही)

- एक "**अनाज ग्रह का कोठार**" प्राप्त हुआ है।

भीनमाल, जालौर [Constable – 2022]

- **उत्खनन**- 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में ।
- **मृदपात्रों** पर **विदेशी प्रभाव** था।
- खुदाई से मृद्भाण्ड तथा **शक क्षेत्रों** के **सिक्के** प्राप्त हुए हैं ।
- **रोमन ऐम्फोरा/ यूनानी दुहत्थी** सुराही भी प्राप्त हुए हैं।
- ईसा की **प्रथम शताब्दी** एवं **गुप्तकालीन अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- संस्कृत विद्वान **महाकवि माघ** एवं **गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त** का **जन्म स्थान** माना जाता है ।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने यात्रा की।

जूनाखेड़ा (पाली)

- **खोजकर्ता** - 1883-84 में एच.डब्ल्यू.बी.के. गैरिक द्वारा।
- **मिट्टी के बर्तन** पर **शालभंजिका** का अंकन ।

नगरी सभ्यता/ मध्यमिका

- यह सभ्यता चित्तौडगढ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।
- इस सभ्यता की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- सर्वप्रथम उत्खनन 1904 ई. में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से शिवि जनपद के सिक्के तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन काल में माध्यमिका पतंजलि के महाभाष्य में तथा महाभारत में मिलता है।
- नगरी सभ्यता से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।
- मध्य पुराषाणकाल के उपकरण चित्तौड़गढ़ जिले के बनास-बेड़च नदी तंत्र की वागन और कादमाली नदी घाटियों तथा कोटा में चंबल नदी घाटी में पाए गए हैं। [EO/RP – 2023]

राज्य की प्रमुख संस्कृतियाँ निम्नलिखित हैं

आर्य सभ्यता

- यह एक **ग्रामीण सभ्यता** के रूप में विकसित हुई।
- आर्यवासियों ने **पशुपालन** के साथ **कृषि** को भी अपनाया था।
- राजस्थान में **आर्य** सर्वप्रथम **उत्तर पूर्वी भाग** में आकर बसे।
- **विकास** - 1000-600 ईसा पूर्व ।
- **प्रमाण** – अनूपगढ़ जिला व तरखान वाला डेरा (श्री गंगानगर) से प्राप्त।
- **अधिकांश** मात्रा में **मिट्टी के बर्तन** मिले हैं।
- **महत्वपूर्ण स्थल**- जोधपुरा, बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़), नोह (भरतपुर), सुनारी (नीमकाथाना)।

बागोर सभ्यता

- भीलवाड़ा के निकट **कोठारी नदी** के किनारे स्थित। [ACF/FRO -2021,वनपाल -2022]
- **पाषाणकालीन सभ्यता** स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** – 1967-68 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस .लेश्निक [AAO -2022]
- **मुख्य उत्खनन स्थल -** महासतियों का टीला [प्रवक्ता (DoTE) -2021]
- "**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**" माना जाता है
- **14 प्रकार** की **कृषि** के अवशेष मिले है।
- **मुख्य कार्य** - कृष, पशुपालन व आखेट
  - **कृषि** व **पशुपालन** के **प्राचीनतम** साक्ष्य मिले।
- **पाँच मानव कंकाल प्राप्त -** जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे।
  - एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों का हार पाया गया [1st Grade – 2022]
- **पाषाण** युग की **सर्वाधिक** सामग्री प्राप्त ।
  - **मुख्य उपकरण**- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपेर, चंद्रिक
  - इसके **अतिरिक्त** तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- मानव **संगठित सामाजिक जीवन** से **दूर।**
- **फर्श** बनाने के लिए **पत्थर** लाये गये थे और यहाँ **फूस** के **वातरोधी पर्दे** भी बनाये गये।
- **उद्योग** - बहुत ही छोटी-**छोटी वस्तुओं** का **निर्माण** और **ज्यामितीय प्रारूपों** की दृष्टि से अत्यंत **उन्नत** ।

सुनारी सभ्यता

- नीमकाथाना की **खेतड़ी तहसील** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित।
- **उत्खनन**- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **लोहा गलाने** की **प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त ।
- स्लेटी रंग के **मृदभांड प्राप्त** ।
  - मौर्यकालीन सभ्यता के **अवशेष** जिनमें **काली पॉलिश** युक्त **मृदपात्र** है।
- मातृदेवी की **मृण्मूर्तियाँ** तथा **धान संग्रहण** का **कोठा** भी प्राप्त ।
- **शुंग** तथा **कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त ।
- **निवासी चावल** का **प्रयोग** करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।

- लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

नलियासर सभ्यता
- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **चौहान वंश** से **पूर्व** की **सभ्यता** के प्रमाण प्राप्त हुए।
- ब्राह्मी लिपि में **लिखित** कुछ **मुहरें** प्राप्त हुई।
  - आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोसेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौधेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के प्राप्त ।
  - 105 कुषाणकालीन सिक्के ।
  - **अवधि** : तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी सदी तक।

कुराड़ा सभ्यता
- **परबतसर (डीडवाना – कुचामन)** में स्थित है। [3rd Grade – 2006]
- **ताम्रयुगीन** सभ्यता स्थल।
- ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त **प्रणालीयुक्त अर्ध्यपत्र** प्राप्त हुआ है।

किराडोत सभ्यता
- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त ।
  - अलग-अलग आकार की **28 चूड़ियों** के 2 सेट पाए गए।

गरड़दा सभ्यता
- **बूँदी** में **स्थित** है।
- **छाजा नदी** के किनारे स्थित है।
- पहली **बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त ।
  - देश में **प्रथम पुरातत्व महत्त्व की पेंटिंग।**

आलनिया सभ्यता
- आलनिया नदी (कोटा)
- चट्टानेश्वर मंदिर के पास पाँच समूहों में प्रागैतिहासिक एवं अन्य काल 35 शैलाश्रय खोजे गई ।
- **खोजकर्ता** - डॉ. जगतनारायण श्रीवास्तव, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर [Patwar Mains- 2016]

कोटड़ा सभ्यता
- **झालावाड़** में स्थित है।
- **उत्खनन** - 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा ।
- **अवधि**- 7वीं से 12वीं शताब्दी मध्य के अवशेष ।

मलाह सभ्यता
- भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- अधिक संख्या में **ताँबे** की **तलवारे** एवं **हारपुन प्राप्त।**

कणसव सभ्यता
- **कोटा** में स्थित है।
- मौर्य शासक **धवल** का **738 ई. से संबंधित लेख** प्राप्त।

नैनवा सभ्यता
- **बूँदी** में स्थित है।
- **उत्खनन**- श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- 2000 वर्ष पुरानी **महिषासुरमर्दिनी** की **मृण्मूर्ति** प्राप्त।

सी.ए. हैकेट ने बूँदी और जयपुर, इन्द्रगढ में यहाँ से क्वार्टजाइट से बनी पूर्व पाषाणकालीन हस्तकुठार (कुल्हाड़ी) सर्वप्रथम प्राप्त की थी [वनपाल -2022/EO/RO – 2023]

डडीकर सभ्यता
- **अलवर** में स्थित है। [FSO -2019]
- पाँच से सात हजार वर्ष पुराने **शैलचित्र प्राप्त**।

सोंथी सभ्यता
- **बीकानेर** में स्थित है।
- **खोजकर्ता**- अमलानंद घोष (1953 में)।
- **कालीबंगा प्रथम** के नाम से प्रसिद्ध।
- **हड़प्पाकालीन सभ्यता** के **अवशेष** प्राप्त।

बांका सभ्यता
- **भीलवाड़ा** जिले में स्थित है।
- राजस्थान की **प्रथम अलंकृत गुफा** की खोज।

गुरारा सभ्यता
- **गुरारा गाँव श्री माधोपुर तहसील (नीमकाथाना)** जिले में स्थित है।
- **चाँदी** के **2744 पंचमार्क सिक्के** मिले।

बयाना सभ्यता
- **भरतपुर** में स्थित है।
- **प्राचीन नाम** -श्रीपंथ
- गुप्तकालीन सिक्के एवं **नील** की **खेती** के साक्ष्य प्राप्त।

तिलवाड़ा सभ्यता
- बालोतरा जिले में **लूणी नदी** के **किनारे** स्थित है।
- **उत्खनन**: 1967-68 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा ।
  - **उत्खननकर्ता**- डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में।
- एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल है।**
- **अवधि**- 500 ई. पू. से 200 ई. तक।
- **खोज** -
  - उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त ।
  - पाँच आवास स्थलों के अवशेष।
  - एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

काल	स्थल	औज़ार
पुरापाषाण [पशुधन सहायक – 2022, SCI - 2022]	• डीडवाना (प्राचीनतम स्थल), जायल (नागौर),बैराठ (कोटपुतली – बहरोड़) • भानगढ़ (अलवर), इंद्रगढ़ (कोटा) • बूढा पुष्कर (अजमेर)	हैण्डएक्स क्लीवर चापर चैपिंग

मध्यपाषाण (माइक्रोलिथ) [Ass Prof – 2021/Const - 2022]	• बागोर (भीलवाड़ा) • बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़) • सोजत • धनेरी • तिलवाड़ा	स्क्रेपर प्वाइंट
नवपाषाण	• इस काल में कोई भी सभ्यता या संस्कृति राजस्थान में नहीं मिलती है।	सेल्ट बसूला कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण	• आहड़ (उदयपुर) • गिलुण्ड(राजसमन्द) • कालीबंगा(हनुमानगढ़) • झर (जयपुर ग्रामीण) • बागोर (भीलवाड़ा) • तिलवाड़ा (बाड़मेर) • बालाथल (उदयपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
ताम्रयुगीन [3rd Grade / RAS -2023]	• नीमकाथाना • बेणेश्वर (डूँगरपुर) • नंदलालपुरा • किराड़ोत • चौथवाडी (जयपुर ग्रामीण) • साबणियां • पूंगल (बीकानेर) • कुराड़ा (परबतसर) • पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़) • पलाना (जालौर) • कोल माहौली (सवाई माधोपुर) • मलाह (भरतपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
लौहयुगीन	• नोह (भरतपुर), बैराठ, जोधपुरा • सांभर (जयपुर), सुनारी (नीमकाथाना), रैढ • नगर • नैनवा (टोंक), भीनमाल (जालौर) , नगरी (चित्तौड़गढ़) • चक - 84 • तरखानवाला (गंगानगर)	

विभिन्न स्थल और उनके उत्खननकर्ता

स्थल/ सभ्यता	उत्खननकर्ता
इंद्रगढ़ और जयपुर	1870 में सी.ए. हैकेट द्वारा
झालावाड़	1928 में सेटनकार द्वारा
नगरी	डॉ. भंडारकर, सौन्दराजन केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग
कुराड़ा	1934 में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा
बैराठ	दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी , कैलाशनाथ दीक्षित
रैढ	डॉ. केदारनाथ पूरी, पी.ए. चक्रवर्ती, विजयकुमार
कालीबंगा	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, जे.वी. जोशी, बी.के. थापर
रंगमहल, बड़ोपोल डाबरी	डॉ. हन्नारिक
आहड़	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी. अग्रवाल, वी.एन. मिश्र, एच.डी. सांकलिया
जोधपुरा	आर.सी. अग्रवाल, विजयकुमार
भीनमाल	आर.सी. अग्रवाल
गिलुण्ड	बी.बी. लाल
नोह	आर.सी. अग्रवाल
बालाथल	वी.एन. मिश्र, वी.एस. सिंह, आर.के. मोहन्त, देव कोठारी
ओझियाना	भारतीय सर्वेक्षण विभाग
गणेश्वर	आर.सी. अग्रवाल
बागोर	वी.एन.मिश्र, एस.एल. लैशानी

2 CHAPTER राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति

- **सरस्वती और दृषद्वती नदी घाटियों** से सभ्यता का केन्द्र **पूर्व और दक्षिण की ओर** विस्थापित हो गया और **आर्य** इन नदी घाटियों में बस गये।
  - सप्त-सैन्धव प्रदेश क्षेत्र भूरे मृद्भांड वाली **आर्य संस्कृति का प्रमुख केन्द्र** बन गया।
- **अनूपगढ़** से प्राप्त **मृदभाण्डों के टुकड़े** हडप्पा से भिन्न प्रकार के हैं।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - **महाभारत** तथा **पौराणिक गाथाओं** से प्रमाणित होता है कि **जांगल** (बीकानेर), **मरूकान्तार** (मारवाड़) आदि भागों से **बलराम** और **कृष्ण** गुजरे थे जो आर्यो की **यादव शाखा** से संबंधित थे।
- **हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दू इण्डिया** (सी.वी .वैद्य) - **महाभारत** की शाल्व जाति की बस्तियाँ **भीनमाल** में **सांचौर** और **सिरोही** के आसपास मिलती है।

राजस्थान का प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

महाजनपद काल (1000 ईसा पूर्व -300 ईसा पूर्व):

- **वैदिक भारत** का अंत **भाषाई**, **सांस्कृतिक** और **राजनीतिक** परिवर्तनों द्वारा चिह्नित।
- 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक, **राजनीतिक इकाइयाँ** बड़े राज्यों में समेकित हो गईं - **महाजनपद**।
- **महाजनपद युग** - दूसरे शहरीकरण की अवधि।
- **राजस्थान** -आधुनिक राज्य नीचे वर्णित कई महाजनपदों का हिस्सा था:

जनपद	विवरण

मच्छा/ मत्स्य महाजनपद [JEN -22/ RPC–22]	• **जिले -** जयपुर, अलवर और भरतपुर के आधुनिक हिस्से।
	• **राजधानी** - विराटनगर (बैराठ)
	  ○ इसका नाम संस्थापक **राजा विराट** के नाम पर रखा गया ।
	• 5वीं शताब्दी में पड़ौसी **चेदी साम्राज्य** के नियंत्रण में आ गया।
	• **सर्वप्रथम उल्लेख** - ऋग्वेद में
	  ○ **मत्स्य निवासी** - सुदास का क्षत्रु
	• **मीणाओं** का शासन

शूरसेन महाजनपद [REET - 18]	• **राजधानी** - मथुरा। • **जिले** - अलवर, भरतपुर, डीग, धौलपुर और करौली। • **यदुवंशी शासको** का शासन ○ **भगवान कृष्ण** से संबंधित
कुरु महाजनपद	• **राजधानी** - इंद्रप्रस्थ। • उत्तरी **अलवर क्षेत्र** का भाग ।
अर्जुनायन जनपद [JEN -20]	• **क्षेत्र** : वर्तमान भरतपुर-अलवर • **शुंग काल** (185 - 73 ईसा पूर्व) के दौरान एक **राजनीतिक शक्ति** के रूप में उभरे।

राजन्य जनपद	• वर्तमान **भरतपुर क्षेत्र** में विस्तृत
	• स्थिति पर विभिन्न मत:
	  ○ **कनिंघम** - मथुरा के निकट
	  ○ **स्मिथ** - पूर्व धौलपुर राज्य राजन्य का मूल घर है।
	  ○ **रैपसन** - उसी क्षेत्र को अर्जुनायण और मथुरा के राजाओं के क्षेत्राधिकार के रूप में वर्णित।

शिवि जनपद [EO/RO - 23/ASO - 22]	• **क्षेत्र**- माध्यमिका या मज्झिमिका (चित्तौड़)। • **अन्य नाम** - प्राग्वाट , मेदपाट • **राजधानी** - शिवपुर । • **उल्लेख** - पाणिनि के अष्टाध्यायी में।
मालव जनपद [Raj Police – 2018]	• **क्षेत्र**- टोंक जिला स्थित नगर व् कर्कोटनगर • राजस्थान के जनपदों में सर्वाधिक सिक्के **मालव जनपद** से प्राप्त है। • **राजधानी**- मालवनगर
शाल्व	• **क्षेत्र**- मत्स्य राज्य के उत्तर में अलवर में । • **राजधानी**- मृत्तिकावती
यौद्धेय [Agri Of - 21/JEN - 22/AAO - 22]	• **सिंधु नदी और गंगा नदी** के बीच के क्षेत्र में स्थित। • **क्षेत्र**: वर्तमान गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले व बीकानेर के कुछ भाग । • उल्लेख **पाणिनि के अष्टाध्यायी और गणपथ** में मिलता है। • रंगमहल में नहर के अवशेष • बाद में **गुप्त साम्राज्य** के अधीन • गणतांत्रिक जनजाति के सर्वाधिक मिक्के

महाभारतकालीन सभ्यता

- **कुरु जांगल** - वर्तमान बीकानेर [aj Police – 18]
- **मद्र जांगल** - जोधपुर
- इस काल में **शाल्व जाति** की बस्तियों का **उल्लेख** मिलता है जो भीनमाल, सांचौर और सिरोही के निकट स्थित थी।

मौर्य युग

- मत्स्य जनपद का भाग **मौर्य शासकों के अधीन** आ गया ।
- **अशोक का भाब्रू शिलालेख** - अति-महत्त्वपूर्ण है।
  - **राजस्थान** में मौर्य शासन तथा **अशोक के बौद्ध** होने की पुष्टि करता है।
- अशोक के उत्तराधिकारी **कुणाल के पुत्र सम्प्रति** द्वारा बनवाये गये मंदिर मौर्य वंश के प्रभाव की पुष्टि करता है।
- **कुमारपाल प्रबंध** तथा अन्य **जैन ग्रन्थ** से पता चलता है कि चित्तौड़ का किला व एक चित्रांग तालाब **मौर्य राजा चित्रांग** द्वारा बनवाया गया था।
- **चित्तौड़** - मानसरोवर तालाब - **मौर्यवंशी राजा मान** का शिलालेख।
- **जी.एच. ओझा**- चित्तौड़ का किला मौर्य वंश के **राजा चित्रांगद** ने बनाया था।
  - 8वीं शताब्दी में **बापा रावल** ने **मौर्य वंश के अंतिम राजा मान** से यह किला छीना था।
- **कोटा के कणसवा गाँव** - **मौर्य राजा धवल** का शिलालेख - राजस्थान में मौर्य राजाओं एवं उनके सामंतों का प्रभाव

- कुषाण शासकों के सम्पर्क ने राजस्थान के पत्थर और मृण्मय मूर्ति-कला को एक नवीन मोड़ दिया जिसके नमूने अजमेर के नाद की शिव प्रतिमा, साँभर का स्त्री धड़ अश्व तथा अजामुख ह्याग्रीव या अग्नि की मूर्ति अपने आप में कला के अद्वितीय नमूने है। [Raj Police – 2018]

विदेशी जातियों का आक्रमण

- मौर्यों के बाद विदेशी जातियों के आक्रमण बढ़ गए।
- यौधेय वंश ने राजस्थान से कुषाण सत्ता को ख़त्म किया।
- 150 ई.पू. में यूनानी शासक मिनाण्डर ने मध्यमिका नगरी को अपने अधिकार में कर राज्य की स्थापना की।
- प्रथम शताब्दी ई.पू. में पश्चिमी राजस्थान में सीथियन (कुषाण, पल्लव, शक) आक्रमण आरम्भ हुए।

सिकंदर के आक्रमण के बाद राजस्थान (326 ई.पू.)

- 326 ईसा पूर्व - **सिकंदर** द्वारा **भारत पर आक्रमण**
  - कभी **राजस्थान** नहीं पहुँचा।
  - हालाँकि, आक्रमण ने **भारतीय इतिहास** को गहराई से प्रभावित किया।
- **प्रभाव**
  - कमजोर दक्षिण पंजाब की **गणतांत्रिक जनजातियाँ** - **मालव**, **शिवी और अर्जुनायन** राजस्थान चले आए ।
  - **पंजाब और राजस्थान** - कई कुलीन वर्गों, या आदिवासी गणराज्यों के केंद्र।
- सिक्कों के अनुसार, राजस्थान के **राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण गणराज्य:**

औदंबर, अर्जुनायन, मालव, कुणिंद, त्रिगर्त, अभिरस, यौद्धेय और शिबी (शिवी)।

गुप्तकाल

- **कुषाणों** का पतन → **प्रयाग** और **पाटलिपुत्र** में गुप्तों का आविर्भाव → **समुद्रगुप्त** और **चन्द्रगुप्त द्वितीय** बड़े प्रसिद्ध थे।
- **प्रयाग प्रशस्ति** - समुद्रगुप्त ने **यौद्धेय**, **मालव** एवं **आभीर** जनजातियों को पराजित किया किंतु प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लाया।
  - उसके स्थान पर **सर्वकर्मदान प्रणाम आज्ञाकरण की नीति** अधिरोपित की।

- बयाना (भरतपुर) से गुप्त शासकों की सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं (लगभग 2000) मिली हैं।
- इनमें से सर्वाधिक सिक्क्के चंद्रगुप्त द्वितीय के हैं।

- **पश्चिमी भारत** - **शकों** का प्रभाव → **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** ,शक शासक **रूद्र सिंह** को पराजित करता है तथा → पश्चिमी भारत में **गुप्तों का आधिपत्य** स्थापित ।
- गुप्तों का **राजस्थान** में प्रत्यक्ष शासन नहीं
  - परंतु निश्चित रूप से राजस्थान में **गुप्तों का शासन** रहा होगा।
    - **जनजातीय राज्यों** की उपस्थिति ।
- **वरीके वंश**
  - 371 ई. के **विजयगढ़** (बयाना) **प्रस्तर शिलालेख** से विष्णुवर्धन नामक वरीक वंश के राजा का उल्लेख ।
  - **पिता** : यशोवर्धन
  - संभवतः **समुद्र गुप्त** के सामंत थे।
- **औलीकर वंश**
  - 423 ई. - **झालावाड़** से एक शिलालेख - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में **औलीकर वंश का शासन** था।
  - लेख में **विष्णु वर्मन नामक शासक** का वर्णन था।
  - इस वंश का संबंध **वर्धन वंश** से भी जोड़ा जाता हैं।

हूणों का आक्रमण

- **गुप्त साम्राज्य** का पतन → **केन्द्रीय शक्ति** का अभाव → गणतंत्रीय जातियाँ **(मालव, यौद्धेय, शिवि)** आपस में लड़कर कमजोर।
- 5वीं शताब्दी का अंत - **हूण राजा तोरमाण** का राजस्थान पर आधिपत्य ।
  - इनके पुत्र **मिहिर कुल** ने विराटनगर के **बौद्ध विहारों** तथा गंगानगर क्षेत्र में **रंगमहल**, **बडोपल, पीर सुल्तान की थड़ी** आदि स्थानों से सभ्यता के चिन्ह नष्ट किये।
  - **बाडोली** (कोटा) - **मिहिर कुल** का बनवाया हुआ शिव मंदिर - जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मौजूद है।
- बाद में राजस्थान के राजपूतों से घुल मिल गये और **राजपूतों से विवाह** संबंध भी स्थापित किये।
  - **गुहिल नरेश अल्लट** - हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह।
- **हूण आक्रमण** का अंत - **मालवा के शासक यशोवर्मन** द्वारा
  - लगभग 532 ई. में हूणों को परास्त करने में सफल।

- 9वीं शताब्दी में उत्तर भारत में **पुष्यभूमि शासकों का वर्चस्व** - सम्राट हर्षवर्धन प्रमुख।
  - राजस्थान के अनेक अभिलेखों में **हर्ष संवत्** अंकित - **हर्ष के साम्राज्य का विस्ता**र चिन्हित।
- इसके बाद का काल - **राजपूत शक्ति का उदय** काल।

राजपूत युग एवं उत्पति सिद्धांत

- **वर्धन वंश के पतन** से लेकर भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना का काल राजपूत काल के नाम से जाना जाता है।
  - **राजपूत काल:** 7वी - 12वीं शताब्दी। [Raj Police -22]
  - **तिथि क्रम** - 650 ई. से 1200 ई. के बीच।
- '**राजपूत**' शब्द भारत में **मुसलमानों के आने के बाद** प्रचलन में आया।
- **प्रमुख राजपूत राजवंश:**
  - मारवाड़ के प्रतिहार और राठौड़
  - अजमेर के चौहान
  - मेवाड़ के गुहिल
  - शाकम्बरी के चौहान
  - चित्तौड़ के मौर्य
  - भीनमाल और आबू के चौहान
  - जैसलमेर के भाटी
  - आमेर के कच्छवाह

राजपूतों की उत्पत्ति

- सम्राट हर्षवर्धन के बाद **राजस्थान की स्थिति केन्द्रीय सत्ता** के अभाव में विकट हो चली थी ।
  - **विदेशी जातियाँ** (दूसरी शताब्दी ई.पू. से 6ठी शताब्दी) धीरे-धीरे स्थानीय जातियों के साथ सम्मलित होने लगी
- **इनसे एक नई जाति** का जन्म हुआ।
  - **राजनीतिक व्यवस्था** - क्षत्रियों के रूप में ग्रहण
  - इन समूहों के नेता और अनुयायी - **राजपुत्र**।
  - बाद में **राजपूत** कहलाने लगे।
  - **निवास स्थान** - राजपूताना/ राजस्थान

राजपूताना शब्द - जॉर्ज थॉमस (1800 ई.) द्वारा [Raj Police -20/ATP – 2022]

- 13वीं शताब्दी तक राजस्थान के बड़े भाग पर **राजपूतों का वर्चस्व** स्थापित हुआ।
- इनका **भील, मेव, मीणों** आदि से संघर्ष हुआ ।
  - जेता, कोट्या, डूंगरिया भील, मीणों तथा राजपूतों के मध्य संघर्ष के प्रमाण मिले।

अग्निवंशीय मत

- **चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो**- राजपूतों अग्निवंशीय। [JEN -2020/ Animal Ass -2018]
  - **वशिष्ठ ऋषि** के यज्ञकुण्ड से राक्षस संहार हेतु **राजपूतों के चारों वंश प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहानों** की उत्पत्ति । [IEO -2018]
- चारों राजपूत वंशों ने **विशुद्धता पुष्टि** के लिये इस मत को अपना लिया।
- अनेक इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं थे।
  - 6 से 16वीं शताब्दी के **अभिलेखों और साहित्यिक ग्रन्थ** - चारों में से **तीन वंश सूर्यवंशी और चंद्रवंशी**।

सूर्य और चंद्रवंशीय मत

- **डॉ. ओझा:** राजपूतों की उत्पत्ति सूर्य और चंद्रमा से - **सूर्यवंशीय और चंद्रवंशीय**
- डॉ. दशरथ शर्मा भी इस का समर्थन करते हैं ।
- **आबू शिलालेख** - गुहिल वंशीय राजपूतों की उत्पत्ति रघुकुल से ।
- वंशावली लेखकों ने **राठौड़ों को सूर्यवंशीय** तथा **यादवों, भाटियों और चन्द्रावती के चौहानों को चंद्रवंशीय** बताया है।

वैदिक आर्यों की संतान का मत - सी.वी. वैद्य [3rd Grade 2009]

ब्राह्मण वंशीय मत - डॉ. डी.आर. भंडारकर, डॉ. गोपीनाथ शर्मा

मिश्रित अवधारणा - देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

प्राचीन आदिम जातियों गोंड, खोखर, भर आदि के **वंशज** - स्मिथ

- वैद्य प्रतिहारों को जो गुर्जर कहा गया है वह जाति की संज्ञा से नहीं, वरन उनका गुजरात पर अधिकार होने से कहा गया है।
  - इसलिए यह मत उचित नहीं कि राजपूतों की उत्पत्ति गुर्जरों से हुई है।

विदेशी वंश से उत्पत्ति

- शक, कुषाण, हूण आदि विदेशी जातियों की संतान - **इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड**। [FSO – 2019]
  - **पुस्तक एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटिज** - राजपूत शक और सीथियन।
  - **प्रमाण:** राजपूतों की प्रथायें जैसे सती प्रथा, अश्वमेघ यज्ञ, सूर्योपासना, शस्त्रों ओर घोड़ों की पूजा, आदि शकों से मिलती जुलती है।
- गुर्जर मानकर विदेशी वंशीय मत को मान्यता - **डॉ. भण्डारकर**
  - **प्रमाण**: पुराणों में गुर्जर और हूणों का वर्णन विदेशियों के सन्दर्भ में दिया गया है।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - अग्निवंशीय प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान भी गुर्जर थे।
  - **प्रमाण:** राजोर अभिलेख में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
  - **यू-ची (कुषाण) जाति के वंशज** - ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र के आधार पर कनिंघम [Patwar – 2016]

3 CHAPTER मेवाड़ का इतिहास

- **मेवाड़** - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा **राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र**।
- **जिले:** भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- **विस्तार-**
  - **उत्तर पश्चिम:** अरावली से घिरा हुआ।
  - **दक्षिणी क्षेत्र :** पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- **मूल रूप से मेदपाट (**मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - **अन्य नाम** - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- **संरक्षक देवता:** एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - **उदयपु**र के पास स्थित
  - वर्तमान मंदिर पूर्व मंदिर के खंडहरों पर
  - ग्रेनाइट में **शिव की 4 मुखी छवि** के लिए प्रसिद्ध।

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

गुहिल - सिसोदिया वंश

- **आदि पुरुष:** गुहिल/ गुहादत्त (566 ईस्वी) [Raj Police – 2020]
- **पिता**:शिलादित्य
- **माता:** पुष्पवती
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की कुल **24 शाखाओं** का वर्णन किया है। [Prot Offi -2019]

बापा रावल

- बप्पा रावल का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) में माना जाता है।
- इस प्रकार **हारित ऋषि** के आशीर्वाद से **बापा को मेवाड़ का राज्य** प्राप्त हुआ।

  बप्पा की माता और पत्नी ने नागदा में शिव के दो मंदिर बनवाये जो अब सास- बहू के मंदिर के नाम से विख्यात है।
- राज प्रशस्ति के अनुसार बप्पा ने 734 ई. में चित्तौड़ के शासक मान मोरी को हराकर उस पर अधिकार कर लिया। [Raj Police -2022]
- **राजधानी** - नागदा
- **उपाधि** - शील, महेन्द्र, खुम्माण और कालभोज, राजगुरु, चक्कवै। [जेल प्रहरी – 2017]
- पूर्वजों की भाँति **सोने के सिक्के** चलाये जो वैभव का प्रतीक है।
- 734 ईस्वी - बापा ने मान मोरी को परास्त कर चित्तौड़ पर कब्ज़ा किया।
- **रावलपिंडी** का नाम उन्हीं के नाम पर पडा।
- उसने उदयपुर के निकट **कैलाशपुरी में एकलिंग (लकुलीश) जी के मंदिर** का निर्माण करवाया।

अल्लट

- **पिता:** भृत भट्ट
- 10वीं शताब्दी के आसपास **मेवाड़ प्रदेश का शासक** बना।
- ख्यातों में **आलु रावल** भी कहा गया।
- **आहड़ को दूसरी राजधानी** बनाया।
  - आहड़ में एक **वराह मंदिर का निर्माण** करवाया।
- **देवपाल परमार** को परास्त करने में सफलता प्राप्त की।
- **माता राष्ट्रकूटों की कन्या** - इसलिये उसे राष्ट्रकूटों का सहयोग भी प्राप्त था।
- **हूण कन्या हरियादेवी** से विवाह किया।
  - हूणों का भी सहयोग प्राप्त था।

  माना जाता है की अल्लट ने सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही का गठन किया।

नरवाहन

- अल्लट की मृत्यु के बाद नरवाहन मेवाड़ का शासक बना ।
- इसके समय का शिलालेख (971 ई.) एकलिंगजी में स्थित लकुलीश मंदिर में प्राप्त हुआ है, जिसमें मेवाड़ की राजधानी नागदा को ही बताया गया है।
- आहड़ शिलालेख 977 ई. के अनुसार नरवाहन पराक्रमी योग्य, कलाप्रेमी, धीर, विजय का निवास स्थान और क्षत्रियों का क्षेत्र, शत्रुहन्ता ,वैभव निधि तथा विद्या का वेदी था।
- नरवाहन शिव का उपासक था।
- आहड़ अभिलेख (आटपुर) 977 ई. के अनुसार नरवाहन का विवाह चौहान राजा जेजय की पुत्री से होना बताया गया है।
- नरवाहन का उत्तराधिकारी सालिवाहन बहुत कम समय के लिए ही शासन कर पाया।
- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार इसके वंशजों ने ही भावनगर , पालिताना, रेवाकाण्ठा एवं राजपीपला में गुहिल वंश का शासन स्थापित किया था।

उत्पत्ति के सिद्धान्त [School Lect – 2024]

- डॉ. गौरी शंकर ओझा गुहिलों को सूर्यवंशी मानते हैं,
- डी.आर. भण्डारकर एवं गोपीनाथ शर्मा मेवाड़ के गुहिलों को ब्राह्मण वंश से मानते हैं।

जैत्रसिंह (1213-53 ईस्वी) [JEN – 2022]

- **चीरवा शिलालेख** में इन्हें एक शक्तिशाली शासक के रूप में वर्णित किया गया है।
- **मेवाड़-नाडौल** के बीच की लड़ाई समाप्त की।
  - नाड़ौल के शासक **उदयसिंह द्वारा पौत्री रूपादेवी का विवाह** जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से किया गया।
- इनके समय दिल्ली के सुल्तान **इल्तुतमिश** ने **नागदा** पर आक्रमण किया (संभवत: 1222 ई. - 1229 ई . के मध्य)।

भुताला का युद्ध: 1227 ईसवी
- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के मध्य हुआ।
- जैत्रसिंह जीत गए

- **जैत्रसिंह** ने तुर्की सेना को भागने के लिये विवश कर दिया (1222 ई. और 1229 ई.) ।
  - जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को परास्त कर दिया परन्तु इस अभियान में **मेवाड़ की राजधानी नागदा** को भारी नुकसान उठाना पड़ा।
    - इसी वजह से जैत्रसिंह ने अपनी **राजधानी नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित** किया।
- **जैत्रसिंह का काल** - मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास में स्वर्णकाल।
- चित्तौड़ के सामरिक महत्व को समझ चारों ओर प्राचीरों से सुरक्षित करवाया।

तेजसिंह (1253-1273 ई.)

- **जैत्रसिंह का पुत्र** - 1253 ई. में मेवाड़ की गद्दी पर बैठा।
- **उपाधि:** ''परमभट्टारक'', महाराजाधिराज और ''परमेश्वर'।
- उनकी **रानी जयतल्लदेवी** ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया।
- उन्हीं के समय "श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि" लिखी गई।

दिल्ली के **सुल्तान गयासुद्दीन बलबन** ने मेवाड़ पर **आक्रमण** किया।
- परन्तु उसको सफलता नहीं मिली।

समरसिंह (1273 - 1302 ई.)

- **तेजसिंह का पुत्र** ।
- **8 शिलालेख** - अपना प्रभाव बनाने के लिये छोटे राज्य के संबंध में कठोर नीति का अनुसरण ।

- समरसिंह ने तुर्कों को गुजरात से निकाला और गुजरात का उद्धार किया।

- राज्य में **जीवहिंसा रोक** दी थी।
- एक धर्मनिष्ठ और धार्मिक दृष्टि से **सहिष्णु शासक**।
- **प्रसिद्ध शिल्पी और कलाकार** - पदमसिंह, केलसिंह, कल्हण, कर्मसिंह ।

साका = जौहर + केसरिया
- **जौहर** – यह राजस्थान की प्राचीन प्रथा है जिसमें महिलाएं अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती थी।
- **केसरिया** – जब वीरों को लगता था कि वे युद्ध नहीं जीत पाएंगे तब मरने-मारने की भावना लेकर सिर पर केसरिया धारण करते थे और युद्ध में उतर जाते थे।

रावल समरसिंह	
कुंभकर्ण	रतनसिंह
नेपाल के गुहिल बंश की स्थापना	1302 ई. to 1303 ई.

चितौड़ का युद्ध (1303 ई.)
- मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह और दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मध्य । [Raj police – 2018]
- **अलाउद्दीन के आक्रमण के कारण:**
  - चितौड़ का सामरिक महत्त्व
    - गुजरात, मालवा, मध्यप्रदेश आदि भागों के व्यापारिक मार्ग यही से होकर जाते थे।
  - अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी लिप्सा ।
  - रत्नसिंह की खूबसूरत पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करने का उद्देश्य।
- इस युद्ध का वर्णन अमीर खुसरो के ग्रंथ खाजाइन-उल-फुतूह में मिलता है। [2nd Grade -2023/Jen -2022]

- **रावल समरिसंह के दो पुत्र थे:**
  - **कुंभकर्ण**
    - उन्होंने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की।
    - नेपाल का राजवंश यही से निकला।
    - नेपाल के शासको ने 'राणा' की उपाधि धारण की।
  - **रावल रतनसिंह**
    - वह समरसिंह के बाद मेवाड़ का शासक बना।
    - इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।

रतन सिंह (1302-1303 ई.)
- **समरसिंह का पुत्र** - 1302 ई. के आसपास चित्तौड़ का शासक बना।
- 1303 ई .में अलाउद्दीन ने धोखे से रतनसिंह को बंदी बना लिया और उसे बाद में गोरा-बादल और पद्मिनी ने मुक्त करवाया। [2nd Grade – 2023]

- रतनसिंह के चित्तौड़ के युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के पश्चात समूची रावल शाखा का अंत हो गया।
- मेवाड़ का रतनसिंह गुहिल वंशीय (गहलोत) रावल शाखा के अंतिम शासक थे। [जेल प्रहरी – 2017]

पद्मिनी की कथा
- **कथानक** मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखित काव्य-ग्रन्थ पद्मावत से इस कथा का आरम्भ हुआ।
- सिंहल द्वीप के राजा **गन्धर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री** थी।
- रतन सिंह के दरबार में तांत्रिक ब्राह्मण **राघव चेतन/ काला चेतन** ने खिलजी को पद्मिनी के बारे में बताया जिसकी वजह से अलाउद्दीन ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- **मेवाड़ का प्रथम साका** - 1303 ईस्वी
  - पद्मिनी + 1600 अन्य औरतों ने **जौहर** कर लिया।
  - राजपूतों ने रतन सिंह के नेतृत्व में **केसरिया** धारण किया।

- चित्तौड़ पर विजय के पश्चात अलाउद्दीन ने चित्तौड़ को हस्तागत कर अपने बेटे खिज्र खां के नाम पर इसका नाम खिज्राबाद रखा और खिज्र खां को इसका प्रशासक बनाया। [PTI -2018/जेल प्रहरी - 2017]

गुहिल/गहलोत वंश की रावल शाखा के शासको का क्रम

बापा रावल-अल्लट -नरवाहन -जैत्रसिंह -तेजसिंह -समरसिंह -रतन सिंह [Raj Police – 2018]

सिसोदिया वंश एवं इसके प्रतापी शासक

हम्मीर (1326-1364 ई.)

- 1326 ई. में सिसोदा शाखा के राणा अरिसिंह के पुत्र **राणा हम्मीर** ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया।
- इन्हें गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के आदिपुरुष कहा जाता है [पशुधन सहायक – 2022]
- **महाराणा/ राणा की उपाधि** धारण की।
- उसे कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में हम्मीर को **विषम घाटी पंचानन** कहा गया [REET -2022]
  - **रसिक प्रिया** - "वीर राजा"
- उसने कई पड़ोसी राजाओं को हटाया और उनके **मैत्री संबंध** स्थापित किये।
- उसने चित्तौड़ में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनवाया।

- हम्मीर को **"मेवाड़ का उद्धारक"** कहा जाता है। [ATP – 2023]
- **सिंगोली (बाँसवाड़ा) का युद्ध**
  - हम्मीर और मुहम्मद बिन तुगलक के मध्य।
  - मुहम्मद बिन तुगलक परास्त हुआ।

क्षेत्रसिंह/ राणा खेता (1364-1382 ई.)

- **हम्मीर का ज्येष्ठ पुत्र**।
- अजमेर, जहाजपुर, माण्डल और छप्पन को अपने साम्राज्य का हिस्सा बनाया।
- **हाड़ौती के हाड़ाओं** को दबाया ।

लक्षसिंह (राणा लाखा) (1382-1421 ई.)

- राणा क्षेत्रसिंह के पुत्र।
- उनके समय **उदयपुर की पिछोला झील** का निर्माण छीतर बंजारे ने करवाया था।
- उसी के समय **जावर की खानों में चाँदी** का उत्खनन हुआ जिससे उसने कई किलों का निर्माण करवाया। [Jen -2022]
- **डोडिया राजपूतों** को अपने यहाँ आश्रय देकर उसने **राजपूत शक्ति को संगठित** करने का कार्य किया।

राणा चुंडा - 'मेवाड़ का भीष्म पितामह'

- इतिहास में उन्हें सिंहासन पर अपने अधिकारों का बलिदान देने और अपने वादे को निभाने के लिए जाना जाता है

- **राणा लाखा ने चूंडा** को **मोकल का रक्षक** नियुक्त किया।
- यह नियम बना दिया कि भविष्य में मेवाड़ के महाराणाओं के सभी पट्टों, परवानों और सनदों पर चूंडा और उसके वंशजों के भाले का निशान अंकित रहेगा।
- **चूंडा** को **अन्य अधिकार** भी दे दिए गए जैसे-
  - मेवाड़ के **16 ठिकानों में से 4** (सलूम्बर सहित) **चूंडा** को दे दिए गए।
  - **सलूम्बर का सामंत** ही मेवाड़ के राजा का राज्याभिषेक करेगा।
  - सलूम्बर का सामंत मेवाड़ सेना का सेनापति होगा।
  - राणा की अनुपस्थिति में सलुम्बर का सामंत **राजधानी की रक्षा** करेगा।

मोकल (1421-1433 ई.)

- महाराणा लाखा की मृत्यु के समय **मोकल केवल 12 वर्ष** का था।
  - अतः राजकार्य **चूंडा की देखरेख** में किया जाता था।
- चित्तौड़ में **विष्णु मंदिर** (द्वारिकानाथ) का निर्माण करवाया और **परमार भोज** द्वारा बनवाए गए त्रिभुवन **नारायण** (मोकल का मंदिर/ समाधिश्वर मंदिर) का जीर्णोद्धार करवाया।
- **श्री एकलिंग जी के मंदिर** के चारों ओर परकोटा बनवाया।
- **झीलवाड़ा** में **चाचा, मेरा, और महपा पंवार** द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी।

महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई.)

- **मोकल** एवं **सौभाग्यदेवी** का ज्येष्ठ पुत्र
- **रक्षक**: रणमल
- उसका **काल** - मेवाड़ के इतिहास में कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में **स्वर्ण युग** ।
- दो पीढ़ियों से **राठौडों का प्रभाव** जो मेवाड़ को जकड़े हुये था उससे छुटकारा दिलाने का श्रेय **महाराणा कुम्भा** हो ही जाता है।
- मेवाड़ के सरदारों ने **रणमल की प्रेयसी भारमली** को भी अपनी ओर मिलाकर **रणमल की 1438** ई .**में हत्या** करवा दी।
- इस प्रकार उन के **कूटनीतिक प्रयास** सफल रहे और मेवाड़ पर **राठौड़ों का प्रभाव कम** हो गया।

प्रारम्भिक विजय

- **रणकपुर के एक शिलालेख के अनुसार** कुम्भा ने सारंगपुरा, नागौर गागरोन, नरायण, अजयमेरू, मण्डोर, मांडलगढ़, बूँदी आदि किलों पर अधिकार कर लिया।
- पश्चिम में आबू को जीतकर गुजरात की ओर से अपनी स्थिति मजबूत की।
- कुम्भा ने पूर्व में हाड़ौती को अपने राज्य में शामिल कर अपनी सीमाओं को पूर्वी भाग तक विस्तृत किया।
- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को राणा कुंभा ने कई बार पराजित किया था [Raj Police 2020]

सारंगपुर का युद्ध - 1437 ईस्वी

- कुम्भा और मालवा (मांडू) के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य हुआ। (विजयी -कुम्भा) [JEN -2022]
- तत्कालीन कारण –
- मालवा के महपा पँवार को मेवाड़ को सौंपने से इंकार [ATO – 2021]
- इस उपलक्ष्य में राणा ने चित्तौड़ में **विजय स्तंभ** का निर्माण करवाया।
- **मालवा और गुजरात** की **संयुक्त सेनाओं** ने बाद में महाराणा को हटाने में सफलता प्राप्त की।

कुम्भा की उपाधियां [JEN /ARO -2022/Patwar -2021]

- अभिनव भारताचार्य. हिन्दू सुरताण (मुस्लिम शासकों द्वारा दी गई उपाधि), राणेराय, रायरासो/राणो रासो/ रायरायण (साहित्यकारों का आश्रयदाता), राजगुरू, हालगुरू / शैलगुरू (पहाड़ी दुर्गों का स्वामी), दानगुरू, छापगुरु (छापामार में पारंगत), चापगुरू, परमगुरू, धीमान, टोडरमल, सुरग्रामणी, रावराय , चाणेराय , महाराजाधिराज, नरपति, अश्वपति, गजपति, वीणा, वादन प्रवीण

आवल-बावल की संधि - 1453 ईस्वी

- कुम्भा + जोधा के मध्य हुई।
- मंडोर जोधा को वापस दे दिया गया।
- सोजत - मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य सीमा स्थापित की गई ।
- कुम्भा के बेटे रायमल का विवाह जोधा की बेटी श्रृंगार कँवर से किया गया।

कुम्भा एवं गुजरात

नागौर युद्ध (1456 ई.)

- नागौर के पहले युद्ध में शम्सखां की सहायता के लिए भेजे गए गुजरात के सेनापति रायरामचंद्र व मलिक गिदई महाराणा कुम्भा से हार गए थे।
- नागौर के प्रथम युद्ध में राणा की जीत हुई और उसने नागौर के किले को नष्ट कर दिया।

बदनौर का युद्ध 1457

- इस युद्ध मे एक तरफ मालवा के शासक महमूद खिलजी, गुजरात के शासक शाह और दूसरी तरफ महारणा कुंभा थे।
- इस युद्ध में महाराणा कुंभा विजयी हुआ। इस विजय के उपलक्ष्य मे कुंभा ने बदनौर (ब्यावर) मे कुशाल माता का मंदिर बनवाया। इस विजय के उपलक्ष्य में महारणा कुंभा ने कुंभलगढ़ का किला बनवाया।

मालवा-गुजरात का संयुक्त अभियान/ चंपानेर की संधि (1456 ईस्वी)

- मालवा शासक महमूद खिलजी और गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह के मध्य राणा कुम्भा के विरुद्ध। [वनरक्षक – 2022]
- उद्देश्य: कुंभा की शक्ति का पतन करना।
- दोनों राज्यों की सेनाओं ने बदनौर नामक स्थान पर राणा कुंभा से संघर्ष किया।
- कीर्ति-स्तम्भ-प्रशस्ति व 'रसिक प्रिया' के अनुसार इस मुकाबले में कुम्भा विजयी रहा।

नागौर-विजय (1458 ईस्वी)

- कुम्भा ने 1458 ई. में नागौर पर आक्रमण किया जिसका कारण श्यामलदास के अनुसार-
  - नागौर के हाकिम शम्सखां और मुसलमानों द्वारा बहुत गो-वध करना।
  - मालवा के सुल्तान के मेवाड़ आक्रमण के समय शम्सखां ने उसकी महाराणा के विरुद्ध सहायता की थी।
  - शम्सखां ने किले की मरम्मत शुरू कर दी थी। अतः महाराणा ने नागौर पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।
  - नागौर विवाद ही मेवाड़ – गुजरात संघर्ष का प्रारंभिक कारण था [College Lect – 2019]

कुम्भलगढ़-अभियान (1458 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन का 1458 ईस्वी में कुम्भलगढ़ पर अंतिम आक्रमण हुआ जिसमें उसे कुम्भा से पराजित होकर लौटना पड़ा।

महमूद बेगड़ा का आक्रमण (1459 ईस्वी)

- कुतुबुद्दीन के बाद महमूद बेगड़ा गुजरात का सुल्तान बना।
- उसने 1459 ई. में जूनागढ़ पर आक्रमण किया।
- वहाँ का शासक कुम्भा का दामाद था।
  - अतः महाराणा उसकी सहायतार्थ जूनागढ़ गया और सुल्तान को पराजित कर भगा दिया।

महाराणा कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- उन्होंने 84 में से **32 किलों का निर्माण** करवाया।
  - **बसंती दुर्ग** (सिरोही के निकट)**, बैराट दुर्ग** (बदनौर के निकट), **अचलगढ़ दुर्ग** (आबू), **कुम्भलगढ़ दुर्ग** (राजसमंद), मचान दुर्ग [Lab Ass – 2022/ HM – 2018]
- **अचलगढ़ दुर्ग**
  - केन्द्रीय शक्ति को पश्चिमी क्षेत्र में अधिक सशक्त बनाने हेतु और सीमान्त भागों को सैनिक सहायता पहुँचाने हेतु आबू में 1509 में बनवाया गया। [Raj Police -2014]
- **कुम्भलगढ़ का दुर्ग**
- राणा कुम्भा को "राजस्थान की स्थापत्य कला का जन्मदाता" कहा जाता है। [JEN – 2021]
  - **शिल्पी -** मण्डन। [2nd Grade -2023]
    - **महत्वपूर्ण रचनाएँ-** देवमूर्ति प्रकरण, प्रसाद मण्डन, राजवल्लभ, रूपमण्डन, वास्तुमण्डन, वास्तुशास्त्र आदि।
  - **किले के अंदर लघु दुर्ग -** कटारगढ़ दुर्ग।
    - सबसे ऊँचा स्थान
    - कुम्भा का निवास
    - मेवाड़ की आँख भी कहा जाता है

विजय स्तंभ [Patwar – 2021/वनरक्षक - 2022]

- स्थापत्यकार- जैता, नापा और पूंजा
- प्रशास्तिकार कवि अत्रि
- इस स्तम्भ को "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश" कहा जाता है।
- मालवा और गुजरात की सेना पर विजय के उपलक्ष्य में [3rd Grade -2023/Raj Police – 2020]
- डाक टिकट जारी – 1949 ई. [CET – 2023]
    - **कुम्भा की स्थापत्य कला का श्रेष्ठ उदाहरण** ।
    - **मामादेव का मंदिर** और **पृथ्वीराज का स्मारक** बहुत प्रसिद्ध है।
    - **अबुल फजल** के अनुसार "यह दुर्ग इतनी ऊँचाई पर स्थित है कि ऊपर देखने पर पगड़ी भी सिर से नीचे गिर जाती है"।
    - **कीर्ति स्तम्भ** - 1460 में निर्मित स्थापत्य का एक उत्कृष्ट नमूना।
        - **रचयिता-** कवि अत्रि और महेश
        - इसकी तीसरी मंजिल पर अरबी में 9 बार अल्लाह शब्द लिखा हुआ है।
- **कुम्भा कालीन मंदिर:**
    - **प्रसिद्ध:** कुम्भास्वामी मंदिर, श्रृंगारचंवरी मंदिर (चित्तौड़), मीरा मंदिर, रणकपुर का जैन मंदिर।
- वह स्वयं **वीणा वादक** थे। [Lab Ass – 2016]
    - गुरु : सारंग व्यास
- उनके द्वारा **लिखी गई किताबें** :
    - सूडप्रबंध, संगीत सुधा, संगीतराज (5 भाग), संगीतमीमांसा ।
    - चण्डीशतक की व्याख्या, गीतगोविन्द की रसिक प्रिया टीका और संगीतरत्नाकर की टीका।

- रणकपुर का जैन मंदिर 1439 ई. में एक जैन श्रेष्ठि धरनक ने करवाया था।
- रणकपुर का चौमुखा मंदिर (आदिनाथ) का निर्माण पाक नामक शिल्पी के निर्देशन में हुआ ।

- **कुम्भा द्वारा रचित अन्य ग्रंथ**: [CET -2023/ ARO -2022]
    - कामराज रतिसार (7 अंग) [JEN – 2022]
    - सुधा प्रबंध - रसिक प्रिया का पूरक ग्रन्थ [JEN -2017]
    - राजवर्णन - एकलिंग माहात्म्य का प्रारम्भिक भाग
    - संगीतक्रम दीपिका
    - नवीन गीतगोविन्द वाद्य प्रबंध
    - हरिवार्तिक
    - नृत्यरत्नकोष
- **मण्डन के भाई नाथा** ने वास्तुमंजरी और मण्डन के पुत्र गोविन्द ने **उद्धार घोरणी**, **कलानिधि** तथा **द्वारदीपिका** नामक ग्रन्थों की रचना की थी।
- **प्रसिद्ध जैन विद्वान**: सोम सुन्दर, मुनिसुन्दरसूरी, जयचन्द्रसूरी, सोमदेव, भुवनसुन्दरसूरि, सुन्दरसूरि, माणिक्य, सुन्दरगणि, टिल्ला भट्ट, नाथा आदि। [Sup Garden - 2021]

- कुम्भा की पुत्री रमाबाई को उनके संगीत प्रेम के लिए 'वागीश्वरी' कहा जाता है।

- **दरबारी साहित्यकार**
    - मंडन - उन्होंने देवमूर्ति प्रकरण, प्रासाद मंडन, राजवल्लभ / भूपतिवल्लभ, रूपमंडन, वास्तुमंडन, वास्तुशास्त्र और वास्तुकार लिखी।
    - मंडन के पुत्र गोविन्द - उद्धारधोरणी, कलानिधि, द्वारदीपिका
    - मेहा कुम्भा
    - हीरानन्द मुनि (कुंभा इन्हें अपना गुरु मानते थे उन्हें कविराज की उपाधि दी)
    - कान्ह व्यास - एकलिंगमाहात्म्य के लेखक

- कुम्भा की पुत्री रमाबाई को उनके संगीत प्रेम के लिए 'वागीश्वरी' कहा जाता है।

महाराणा कुम्भा की मृत्यु

- **उन्माद का रोग** से पीड़ित ।
- **पुत्र उदा (**उदयकरण**)** ने 1468 ईस्वी में 'मामादेव तालाब' के किनारे उनकी **हत्या** कर दी ।

रायमल (1468-1509 ई.)

- **जावर के पास लड़ाई** में उदा को पराजित कर उसने 'दाड़िमपुर विजय' प्राप्त की और चित्तौड़ पहुँच गया।
- **पिता:** कुम्भा
- मेवाड़ी सामंतों को एक सूत्र में बाँधकर अनेक विजय प्राप्त की।
- **अद्भुतजी के मंदिर** का निर्माण करवाया और **एकलिंग जी मंदिर** का उद्धार करवाया।
- **प्रमुख शिल्पी** - अर्जुन
- **विद्वान** - गोपाल भट्ट और महेश
- उनकी रानी श्रृंगारदेवी ने घोसुण्डी की बावड़ी बनवाई।

पृथ्वीराज

- **रायमल का पुत्र**।
- उन्हें "**उड़ना राजकुमार**" कहा जाता था ।
- उन्होंने अजमेर के किले का नाम बदल कर अपनी **पत्नी तारा के नाम पर तारागढ़** कर दिया ।
- उनका स्मारक **कुम्भलगढ़ दुर्ग** में है ।

जयमल

- रायमल का पुत्र ।
- **सोलंकियों से लड़ाई** में उनकी मृत्यु हो गई ।

संग्राम सिंह प्रथम / महाराणा सांगा (1509ई .- 1528ई.)

- रायमल का पुत्र ।
- वह अपनी सूझबूझ और सभी विरोधियों को दूर करने के बाद **मेवाड़ का शासक** बना।
- उस समय दिल्ली में **सिकंदर लोदी**, गुजरात में **महमूद शाह बेगड़ा** और मालवा में **नासिरूद्दीन** का शासन था।